

किताबघर
नयी दिल्ली-110002

# वर्णमाला से बाहर

समीक्षा के लिए

विनोद दास

ISBN—81-7016-335 8



प्रकाशक
किताबघर
24 अंसारी रोड दरियागंज
नयी दिल्ली 110002

प्रथम संस्करण
1995

आवरण
सुरेन्द्र जोशी

मूल्य
अस्सी रुपये

मुद्रक
एस०एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

VARNAMAALA SE BAAHAR (Hindi Poems)
by Vinod Das
Price Rs 80 00

बाबू जी और अम्माँ जी के लिए
सादर

## क्रम

## कटआउट

समूचा शहर उनके आदमकद कटआउट से पटा है

कार खिडकी से झाँकते हुए
जब वे अपना कटआउट देखते है
उनकी विराटता और भव्यता के सम्मोहन मे डूबकर
सिर्फ कृतिकार को नहीं
प्रायोजक को भी मन ही मन धन्यवाद देते है
कि जो खुद नहीं है
और होना चाहते है
उसमें वह सभी कुछ है

कटआउट के करीब
अपने सुदीर्घ जीवन म उनको पहली वार लगा
कि अपनी महत्त्वाकाक्षा से वे कितने छोटे है
फिर कटआउट छूने के लिए
वे बडे होने लगे
पहले दृष्टि गयी और चश्मा लगा
फिर दिल सिकुडा
अन्तत कम सुनायी पडने लगा
जनता चाहे अपनी तकलीफ वयान करती
या करती उनकी आलोचना
व हाथ जोडकर विनीत मुद्रा में
सिर्फ मुस्कराते रहते

गोया उनके धड़ पर
कटआउट का चेहरा चिपका दिया गया हो

अब यह उनकी स्थायी मुद्रा थी
और बदलती नहीं थी
मृतक के चेहरे की आखिरी मुद्रा की तरह ।

## हमशक्ल

वे दो विरोधी राजनीतिक दलो के प्रतिनिधि है

एक दूसर क साथ
वे रोज दाँव खेलते है
और उन घरो मे मुहरे बैठा देत है
जिधर स विरोधी भाग सकता है ।
अगर एक किसी खास काट का कुर्ता पहनता है
तो दूसरा झट सफारी को तिलाजलि देकर
उसी काट का कुर्ता सिलवाता है

दूसरा ईजाद करता है कोई लोकप्रिय नारा
बिना किसी शर्म-सकोच
पहला उसे अपने घोषणा पत्र म छाप देता है

बाजार मे हमशक्ल पुर्जे ही नहीं बढ है
हमशक्ल मानवाकृतियाँ भी बढी है
ब्यूटीपार्लर से निकलती दो लिपी पुती स्त्रियाँ
लगभग एक जैसी लगती है

यह हमशक्लो का समय है

वे दानों प्रतिनिधि एक जैसी कार म चलते है
उनके पीछे एक जैसे बाहुबली कार्यकर्ता रहते है
वे दोनो बहुराष्ट्रीय कम्पनिया को न्योता दने विदेश जाते हैं
उनकी भाषा मे एक जसे विशेषण होत है

उन दोना के बीच अदृश्य समझौता है
सार्वजनिक मचो पर सिर्फ
वे एक दूसर की तीखी आलोचना करते है
भगवतीचरण वर्मा की कहानी दो बाँके की तरह ।

## मूर्तिभंजक

मुँहअँधेरे
चौराहा स्थित आदमकद मूर्ति का
वे अगभग अनुष्ठान कर रहे थे

एक नयी मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा के लिए
शायद यह एक गुपचुप तैयारी थी

सबसे पहले
उन्होंने उसका तोडा हाथ
फिर सिर और पाँव
ताडते समय
उनके चेहरों पर अनन्य चमक थी
गोया वे दुनिया बदल रहे हों

लेकिन यह परिवर्तन नहीं
एक दासता से दूसरी दासता की सरल यात्रा है
विदेशी ऋण करारो मे
ब्रितानी की जगह अमेरिकी हिज्जे रखने की तरह

उसी चौराहे पर
एक बार फिर जीवित विचार की कब्र बनाने के लिए
मूर्ति अनावरण उत्सव चल रहा है
मचासीन वक्ता धाराप्रवाह बोल रहे है
मै उन्हें पहचानता हूँ और उनकी खस्ताहाल भाषा को भी

उसी खडित मूर्ति के स्थापना समारोह मे भी
इन्होने पिछली बार भी इसी तरह दिया था कठस्थ वक्तव्य

फिलहाल उनकी चुटीली उक्तिया पर
मूर्तिभजक
दर्शक दीर्घा म तालियाँ बजा रहे है ।

## पाँच सितारा होटल

यमुना नदी के मुहाने पर बसी यह बस्ती
उजड़ गयी है
एक सपने की तरह
बेआवाज़

झुग्गी झोपड़ी की जगह
बन रहा है एक पाँच सितारा होटल
सब कुछ खरीदा जा सकेगा यहाँ
मसलन चटपटा खाना पीना बिस्तर और देहें
नींद हाँ नींद के बारे में अलबत्ता
कुछ यकीन के साथ नहीं कह सकता
वैसे उसे भी खरीद सकते हैं यहाँ
दवा गोलियों से

बाजार संस्कृति में टोकाटाकी नहीं होती
आत्मग्लानि भी नहीं
कोई नहीं पूछता
जो यहाँ झुग्गी झोपड़ी में रहते थे
वे कहाँ गए
जो लुटाया जाता है यहाँ
कहाँ से आया है लूटकर
निर्वसन होती जिस स्त्री को लोलुपता से
देखा जा रहा है नाच
किस घर की है

सब देखते हैं यहाँ
एक दूसरे को
सिर्फ लूट के सामान की तरह ।

## बाजार में आग

वह बाजार से आ रही थी

चाय पैकट
उसके हाथ में था
और वह हाँफ रही थी

यह थकान न थी
भय की परछाईं थी
जो उसके चेहरे को विवर्ण बना रही थी

मैंने पूछा
क्या बात है
क्या कुछ अनहोनी घटी है

एक निमिष
वह मुझे आर पार देखती रही
फिर उसाँस ले बोली

बाजार में आग लगी है

यह मात्र सूचना न थी
घर चक्की में पिस रही औरत का
एक ऐसे समय में राजनीतिक वक्तव्य था
उसे छोटे परदे ने पहुँचा दिया था
घर में बाजार

## सँकरे दरवाजे मे

मेरा घर
आधुनिक तकनीक स विकसित
विकास प्राधिकरण कॉलानी म है
जहाँ खेता मे उगती थी ईख
और हरी मटर
वहाँ बीस फुट चौडी सडक है
और एक उजडा पार्क
जहाँ सुसस्कृत जन फेकते है कूडा

यहाँ की मिट्टी बेहद उर्वरा है
नागरिका का बेतकल्लुफी से फैलता है कद्दू की तरह शरीर
और दरवाजे बनते है तकल्लुफभरे सँकरे
जब खिलखिलाते दो दोस्त एक साथ आते है
अरझ जाते है
इस सँकरे दरवाजे मे

विकास की यह आधुनिक सकल्पना है

न कोई साथ आए
न कोई साथ रहे

सब अकेले रहे
सब अक्ले हात जाएँ

## विकास कथा

ग्यारह माह मरणातक खामोशी के बाद
डूबते बजट की चुंधियायी चीख से प्रेरित
विकास पर सगोष्ठी थी

सभाकक्ष में माइक अधिक थे
विचार कम
वक्ता मतव्य नहीं देते थे
चप्पू चलाने का अभ्यास करते थे तर्कों की नदी मे
वाद-विवाद की पाठशाला शैली की तरह
अपनी दबग आवाज मे

चश्मा सरकाते हुए
स्थिर लहजे में
कुछ कर रहे थे वर्तमान नीतियों की आलोचना
उस सीमा तक सम्हल सम्हल कर
जहाँ विरोधी मानकर उनकी सुविधाएँ ठप न कर दी जाएँ

कुछ उद्धृत कर रहे थे
रटे रटाए सूत्र
समुद्र-पार छपी किताबों से
जो अब वहाँ चलन मे नहीं थे

मत्रणा समय कम था
सभी जल्दी में थ

## मे आई कम इन सर

प्रतिदिन
दफ्तर से विदा लेने से पहले
पारदर्शी केबिन की कुर्सी पर
व अपने पुत्र के विराजने की कल्पना कर मुदित होते थे
और उसे पब्लिक स्कूल क देसी सस्करण मे पढाने के लिए
वापसी वेला मे अक्सर सब्जी की कटौती करते थे

जब अफसर डाँटता
तो वे डाँट कुछ कम सुनते
अफसर की फर्राटी अग्रेजी पर मुग्ध होकर
उसमे अपने पुत्र का चेहरा ज्यादा देखते थे

सत्ताइस बरस
सब्जी की कटौती देसी पब्लिक स्कूल को अर्पित करने के बाद

सत्ताइस बरस
अफसर की अग्रेजी डाँट धैर्यपूर्वक सुनने के बाद
सेवानिवृत्त पिता
सत्ताइस बरस बाद बाँटना चाहते है
हाल ही मे बन अपने अफसर पुत्र से मन की व्यथा

किन्तु जब वे देखते है
उसका पाषाणवत् भावहीन चहरा
उन्हें लगता है
वह एक पारदर्शी क्रेबिन म बैठा है

# मित्र

सात सौ पचपन किलोमीटर सफर करने के बाद
जब मै उससे गले मिला
उसकी शिराओ मे वह उष्मा नहीं थी
जिसे पिछले बीस बरसो से मैने सहेज रखा था
सचित धन की तरह
अपनी स्मृति मे

अपनी कई छद्म खखारो की मदद से
उसकी हाँ हूँ की स्वरलहरी के बीच
उसे मैने सुनाया अपना हालचाल
यचपन की स्मृति कुज मे ले जाने के लिए
सुनाए कई पुराने चुटकले
लेकिन उसके इस्त्री किए चेहरे पर
उभरीं नहीं एक भी सलवटें

इक्कीसवी सदी के मुहाने पर
यह एक नए मित्र का जन्म था

यह मित्रों के साथ
न हँसता
न रोता

वह अदल बदल लेता था जिससे कमीज
गिलास टकराकर देता था
जिस तरह जीवन की शुभकामनाएँ

यदि मित्र करता फोन
वह रिसीवर को क्रेडिल पर
धीरे से रख देता चुपचाप

मित्रों को न तो दिखाता
अपने प्रेमपत्र
न पूछता उनकी जेब का हाल

वह रहता हमेशा सशंकित
कहीं उतार न ले उसका अभिन्न मित्र
सफल व्यक्तियों के पते
उसकी उस डायरी से
जिसमें असफल मित्रों के नाम काट दिए गए थे ।

## बेरोजगार

वे सड़क पर उड़ते हुए खेदपत्र है

रात चढ गयी है
रोजगार समाचार छप चुके है अखबारो में
एक एक करके गुल होती जा रही है
दुकानों की रोशनियाँ
उनके तग घरो की फोल्डिंग चारपाइयाँ
खुल गयी है
और उन्हें आवाज दे रही है

लेकिन वे घर नहीं जाना चाहते

पहला कहता है
बिल्ली पाँव से घर में घुसने के बावजूद
जगते हुए पिता जब नक्ली खाँसी खाँसते है
मुझे लगता है डर

कहता है दूसरा
मुझे घर की जलती बत्ती से
तुम कल्पना नहीं कर सकते
कितना कठिन होता है
अपनी परास्त आँखें ऊपर उठाना
अपनों के सामने
रोशनी में

अपनी कमीज के बटन खोलता-बंद करता
अगला खामोश है
उसे लगी है कडी भूख
लेकिन जब उसे
खाने की ढॅकी थाली याद आती है
कुछ काम-काज किए बिना
रात में जो उसे घर मे रखी मिलती है
तब शर्म और गुस्से से
वह चबाने लगता है
अपनी अगुलियाँ

यह घर है
जहाँ उनसे कोई नहीं कहता
जगह नहीं है
जहाँ वे जा सकते है फिलवक्त

लेकिन हमारे समय की
यह कितनी बडी दुर्घटना है
कि पृथ्वी की सर्वाधिक उर्जावान भुजाएँ
और हमारे कस्बे के सर्वाधिक कोमल मन
भटक रहे है सडकों पर
पतझड के सूखे पत्तो की तरह ।

## तारीख

वे अपने खत से बेदखल हल है

पौ फट चुकी है
काँख में गठरी दबाए
पुकार से पहले कचहरी पहुँचने के लिए
बस अड्डे या स्टेशन पर लगे साइनबोर्ड
व ऐसे तकते है
गोया उनकी आँखों की रोशनी
कभी की गायब हो चुकी है
और अब वहाँ स्फटिक की पुतलियाँ है
जिनमें कोई हरकत नहीं होती

उनकी कैफियत में
यह कहना नासमझी होगी
कि वे नेत्रहीन है

हकीकत यह है
कि उनके अक्षर
पाठशालाओं में कैद है
और अँगूठा दिखाते है उन्हें

दरअसल वे साहूकार की बहियों में रखे कटे अँगूठे है

जब भी पडती है तारीख
उनके घरों से कुछ न कुछ गायब हो जाता है

और आ जाता है उसी दिन
तर्कपोषी आततताइयों के यहाँ
कोई नया सामान

उनकी तकलीफें
उस पुरानी मिसिल की तरह है
जिन्हे बाहर निकालने के लिए
हर कोई कुछ न कुछ वसूल करता है
और जब आता है सुनवाई का वक्त
अदालत उठ जाती है
और उन्हे मिलती है
सिर्फ तारीख

वे कचहरी की मात्र तारीख है

शब्दरोधी कान के परदे पर पडनेवाली
व ऐसी सतत आवाज है
जो रोज बडी आस से
उस सस्कृति के सामने देती है धरना
जो हर धरने को
समय के लबे हाथों में सौप देती है

देखो । देखो ।
कचहरी की मुँडेर पर
बालिश्तभर सूरज चढ आया है
और अहाते के तमाम मुशी
उनके इर्दगिर्द मँडरा रहे है
मधुमक्खियों की तरह ।

## वामन देव

हाथो मे फीता
और एक अधगला रजिस्टर लिए हुए
वे पृथ्वी की पैमाइश कर रहे हैं

कोई और नही
वे हमारे समय के वामन देव हैं

वे जब आते है
बरसात मे चींटियो की ढूह की तरह
पूरे गॉव मे मच जाता है हडकप

कोई हॅडियाभर दही लाता है
कोई डलिया मे पके आम
कोई एक मुर्गा जिबह कर देता है

गॉव के सिवान पर स्थापित
वे उस अज्ञात देवता की तरह है
जिनको खुश करने के लिए
हर कोई कुछ न कुछ चढावा चढाता है

पता नहीं कब
उनकी खतौनी से उनके खेत गायब हो जाएँ

पता नहीं कब
उनसे कौन सी रकम वसूल कर ली जाए

यह उनका ही तिलिस्म है
गाँव निर्जन हो रहे है
और शहर की गरीब वस्ती मे बढ रही है खोलियाँ

यह उन्हीं का प्रताप है
पसीने और ऑसू से तर मनीआर्डर गॉव आते है

सूजी आँख
और भर्राए गले से गायी जाती बिदेसिया के
वे करुण जनक है

वे हृदयहीन वामन
पृथ्वी को तकसीम करते रहते है

कच्चे गोश्त की तरह ।

## ठेले पर दुनिया

एक असामान्य समय म
यह एक सामान्य दृश्य था

ठेले पर सजे थे कल
एक तरफ भरेपूरे हँसत और स्वस्थ
और दूसरी तरफ निखर थे
मरियल सूखे
काले कलूटे अधसडे और बीमार

जब मैने देखा
ठले पर भो है बँटी दुनिया
दो हिस्से म
मै सन्न रह गया

सस्ती ढेरी से
कुछ बहतर केले छाँटकर
जैसे कुछ आगे मै बढा
पीठपीछे मैन सुना
कह रहा था ठेलेवाला
कि इस आदमी क चहरे से
मै भाँप गया था
यह सस्ती ढरी स खरीदेगा केले

मै चौका
क्या वह जादू जानता है

या मेरी सूरत मिलती है
इन मरियल, सूखे, अधसडे केलों से

मुझे लगा
वह शायद गलत नहीं है

अब मै मुडा
और उसकी तरफ
चुपचाप प्रशसा की दृष्टि स दखने लगा

अचानक यह दख
मै हक्का बक्का रह गया
कि सिर्फ मेरा ही नहीं
उस मरदूद का चेहरा भी मिलता है
सस्ती ढेरी के केला से

फिर मुझे याद आन लगे
अनगिनत मिलते जुलते चेहर

सबसे पहले याद आए
वे कोलतार चेहरे
पृथ्वी की अलघ्य खाइया
और मनुष्या क बीच असभव दूरिया का पाटत हुए
जो अहर्निश रहगुजर पर गती कुदाल चलात रहत ह

इसक बाद
याद आयीं
लाँगमारी धाती मे स्त्रियाँ
जा मुँहअँधेर झाडू टाकरी क साथ दिखाइ दता ह

और इस वसुन्धरा को
स्वच्छ सुदर और रहने लायक बनाती है

मेरी स्मृति में
सूर्योदय के साथ
नीली लहर की तरह कारखाने जाते
वे चेहरे भी कौंधे
जो सूर्यास्त के बाद
चिमनी धुएँ की लकीर की तरह निकलते है
और कपास के फूल स
एक आदिम पशु को आदमी बना देते है

फिर सहसा
मुझे अपने काका के झौसे चेहरे की सुध हो आयी
बैल की तरह जुतकर
जो जमीन को इतना मुलायम और उर्वर बनाते
कि सारे घरो की पतीलियाँ
आग पर खदबदाती रहतीं

मै जितना और सोचता
हर बार कुछ न कुछ नए
मिलत जुलते चेहरे मिलते

बहुत कोशिश करके भी
मै उनको यह बता न पाया
कि उनकी त्वचा असमय बदरग और काली क्या हो जाती है
कि उनकी हड्डियाँ सूखकर टेढी मेढी क्यों हो जाती है
कि असमय उनकी ऑखो के नीचे काली नाव क्यों निकल आती है
कि असमय उनका चेहरा झुर्रियों का कारखाना क्यों बन जाता है

## स्त्री

बिंदी
उसके भाल पर
चमकती रहती है
रक्ताभ सूर्य की तरह

बिंदी एक घर है
और यह घर
हर पल
उसके साथ रहता है

हर दिन
स्नान से पूर्व
वह उतार देती है बिंदी
और चिपका देती है
स्नानगृह के दरवाजे पर

फिर वह पहले जैसी नहीं रह जाती
न कुछ पल पहले जैसी माँ
न कुछ पल पहले जैसी बहू
न कुछ पल पहले जैसी पत्नी

वह एक स्त्री बन जाती है
सिर्फ एक चिर युवा स्त्री

जल-स्पर्श मे रोमांचित
यह स्त्री एक दरवाजे के भीतर बद है

मै शर्मिंदा हूँ
यह मेरी स्त्री है

एक नई पहचान की
मैं शुरुआत करना चाहता हूँ

म दरवाजा खोलना चाहता हूँ ।

## प्रार्थना के क्षण

यह कघी करने की वेला थी

निभृत एकात म
वह दर्पण के सामन खडी थी
और केशों पर कघी फेरते हुए
मद मद
कुछ बुदबुदा रही थी

वह सुदर थी
पर किसी अदृश्य को सबोधित
इस तन्मय क्षण म
वह और भी सुदर लग रही थी
अनिर्वचनीय सुदर

तुम सुदर हो
मै उससे कहना चाहता था
पर कह न सका

मुझे लगा
ये प्रार्थना से एकात क्षण है

इस क्षण
कोई व्यवधान अपराध होगा ।

## बादल की छाँह मे

सुकेशी
छत पर
केश सुखा रही थी

प्रसन्न वायु सी
समूची सृष्टि मे छितर गयी थी
धुले केशो की सुगध

उनकी दिव्य चमक से
चकमका रही थीं आँखे
मानो चमका रहा हो शीशा
कोई धूप में

सुकेशी
जब लापरवाही से झिटकती थी
भीगे काले केश
लगता छत पर उड आया है
दुपट्टे की तरह
महारास करता एक सजल बादल

जीवन की कडी धूप में
जब सूख जाएँगे मेरी आत्मा के होंठ
झुलस कर ताँवई हो जाएगी मेरी काया
पृथ्वी और आकाश के बीच

[illegible]
इस वादल की छाँह म
मै कुछ क्षण सुस्ताऊँगा

कुछ क्षण भीगूँगा
कृतज्ञ आँखा स ।

## बिसरायी कघी

यह कोई कथा चरित्र नहीं
हमारे पडोस की एक स्त्री है

सघन एकात मे
उसकी ज्वरग्रस्त बडबडाहट से
सिहर उठती है छत

एक स्त्री की सॉवली छाया
करती रहती है उसका पीछा
और वह धोती मे बेटी छिपाकर
उसे दुत्कारती रहती है
हिला हिलाकर हाथ

स्वप्न रथ पर
बालवृद के बैठ जाने के बाद
कई कोणों से दर्पण निरखते हुए
वह पहनती है बुँदे
फिर कगन
और घनी काली वेणी गूँथकर
करती है इतजार
करीने से बिछाकर साफ सुथरा बिस्तर

जब चली जाती आखिरी बस
और चाँद दिखायी देता बहुत देर
वह उतारती पहले अपना कगन

फिर युद्ध
और श्लथ हाथों से खोलती लम्बी वेणी
धीरे धीर

यह कोई कथा चरित्र नहीं
सिलवटविहीन बिस्तर पर औंधी लेटी स्त्री है
अपने ही घर में
पुरुष की एक बिसरायी कथा की तरह ।

## भोर की खिडकी

वह अक में थी

भोर की खिडकी
धीरे धीरे खुल रही थी

तारे डूब रहे थे
और कपाट की झिर्रियो से
गृहचर्या की आहटे
जैसे जैसे तेज होती जा रही थी
वह चचला चपल गति से
मेरे अग-प्रत्यग चूम रही थी

मै अवाक् था

समूचे कायाघट में
वह प्रेम भर लेना चाहती थी

वह सुगृहिणी थी
नगरपालिका की जलापूर्ति बद होने के बाद
पानी की किल्लत क्या होती है
इसकी अनुभूति शायद उसे गहरी थी ।

## असभव दूरी के बावजूद

तुम दिखती हो

अनत जलराशि के बीच
जैसे जहाज से दिखता है
सुदूर चमकता
पृथ्वी का हरा भरा भूखण्ड
तुम प्रतिदिन
उसी तरह एक वरदान की तरह दिखती हो

जीवन की तेज अधड मे
किसी भी क्षण
गहरे अतल मे डूब सकता है मेरा जहाज
लेकिन जीवन की उत्कट लालच में
मृत्यु के अक म भी
मै विपुल सौदर्य चखना चाहता हूँ
असभव दूरी के बावजूद

दुनिया की सरल समझ से परे
तुम दिखती हो
जैसे कोई उदास निर्जन बदरगाह
जहाँ मेरा हृदय लगर डालना चाहता है
विनम्र कृतज्ञता के साथ ।

## झूठी तसल्लियाँ तुम सब घर जाओ

हम
जैसे दो मरीज है
और एक अस्पताल के सुविधासम्पन्न कक्षों में
अलग अलग भर्ती है

तुम्हारे कक्ष से
दीवारों के आरपार
पूरी रात सुनायी देती है साफ साफ
तुम्हारी चहलकदमी की पदचाप
जैसे फर्श नापते रहते है मेरे बेचैन पैर
सारी दुनिया सोने के बाद

पृथ्वी की दुष्ट आत्माओं से [illegible]
हम मिलते है
फिर मुस्कराते है
जैसे मौत के इंतजार में [illegible]
एक दूसरे को झूठी [illegible]

हमें कोई उज्र नहीं है
झूठी तसल्लियों [illegible]

यह तय है
एक दिन [illegible]
वहाँ [illegible] ।

## तुम नोचती हो वर्तमान तितलियो के पख

यह कहना जरा मुश्किल है
कि अकेलापन
तुम्हारा अपना चुनाव है या विवशता

यह आत्मरक्षा के लिए है
या धीमे धीमे खुद को खत्म करने का उपक्रम

यह कैसा न्याय है
कि अतीत के एक दुष्ट के प्रतिशोध में
तुम नोचती हो वर्तमान तितलिया के पख

तुम्हारे अकेलेपन के अभेद्य किले में
क्या स्मृति के बिच्छू
तुम्हें नहीं डसते

तुम्हारा अकेलापन
वस्तुत मेरे लिए एक धीमा जहर है

मेरे जिस्म का खून काला पडता जा रहा है
तुम्हारा अकेलापन बढने के साथ

तुम चाहो
तो मै अब भी बच सकता हूँ
कुछ और चद दिनों के लिए ।

## सब कुछ नष्ट होने से पहले

तुम आओगे

जब स्मृतियाँ काँखकर उठेंगी
और ऐनक भी चढ़ाने के बाद
तुम्हें पहचान नहीं पाएँगी
तब तुम आओगे

तुम्हारी आवाज मेरी छड़ी होगी
जिससे टटोल टटोलकर
एक नेत्रहीन की तरह तुम्हें खोजते हुए
मैं उस पुराने पत्थर से टकराऊँगा
जहाँ कभी फूटा था मेरी निर्मल कामना का सर

तुम आओगे
जब सिटपिटाकर
मैं पहले की तरह पूछ नहीं पाऊँगा तुम्हारा हाल
और न ही पकाकर खिला पाऊँगा
पतली पतली स्वादिष्ट खिचड़ी
जिसे इस समूची वसुन्धरा पर
सिर्फ मैं और सिर्फ मैं ही पका सकता हूँ

तुम आओगे
जब अंगुलियों में अंगुलियाँ फँसाकर भी
पृथ्वी पर चलना दुश्वार होगा

## इसका अनुवाद सिर्फ तुमसे ही सभव है

मेरा दु ख
असाधारण है

यह छिपकर भी चमकता है
जैसे झलकता है ताल क ठहरे निर्मल जल में
तलछट मे पडा पत्थर

भूख-नींद उडा देने वाला दु ख
रक्तचाप बिगाड देने वाला दु ख
चेतना छीन लेने वाला दु ख

यह दु ख कैसा है
जिसका बोझ भी अदल-बदल नहीं सकते
किसी से हम

एक कधे से दूसरे कधे
दु ख की पोटली बदलते बदलते
बुरी तरह दुखने लगे है
मेरी आत्मा के कधे

किसी भी शब्दकोश में
इसका अर्थ नहीं मिलता

कोई नहीं कर सकता
इस विपुल धरा पर
मेरे दु ख की व्याख्या

## हृदय की अनिर्वचनीय पीडा से बाहर

हृदय की अनिर्वचनीय पीडा से बाहर
क्या एक वृक्ष की तरह
तुम निस्संग हो

अकेले अपने तहखाने में
दीन दुनिया से बाहर
जिस अदृश्य से तुम करती हो बात
क्या वह मै नहीं हूँ

मेरी उपस्थिति से सचेत
क्या हडबडी में
तुम सहेजने नहीं लगती हो
अपने दुपट्टे की बिगडी तह

कई बात कहने या न कहने से
फर्क नहीं पडता

मसलन यह कहना कि जीवन के लिए चाहिए
हवा, पानी और आहार

मसलन मै हूँ
और तुम हो

मसलन हमारे बीच है प्यार

# नए जीवन की प्रस्तावना के लिए विकल

तुम इतनी दूर हो
कि तुम्हारे हृदय छूने में
सपने को भी आ जाती है थकान

इतनी निर्जन जगह
कि वहाँ कोई राह तक नहीं जाती

मेरे पास शब्दों की कमन्द भी नहीं
तुम तक पहुँचने के लिए

तुम्हारी उदास छवि के साथ
रोता भटकता
मैं अपने समय का पराजित सच हूँ

नए जीवन की प्रस्तावना के लिए विकल
तुम्हारे निब की काँपती नोक पर टिकी
मैं एक जटिल कथा हूँ

सरल निष्कर्षों के आधार पर
तुम लिख नहीं सकती
इसका उपसंहार

दुखांतिका भी नहीं

कथा लिख चुकने के बाद भी
जैसे घुमड़ता रहता है कोई पात्र

## वे यहाँ क्यों नहीं हैं

पता नहीं किस तरह
पता नहीं किस दिन
शायद एक अज्ञात रहस्य की तरह
वे आए
और नदी तट पर बस गए

संभव है
जीवन अरण्य में भटकते हुए
पस्तहाल घुटनों की विनय पर
ठहर गए हों उनके पाँव

हो सकता है
जल पर थिरकते चाँद के जादू से
बँध गया हो उसका मन

यह भी संभव है
दुर्गम संसार में पाकर प्रकृति की सरल छाया
उन्होंने छा ली हो
घास फूस की छत

वे वहाँ थे
और पश्चाताप की परछाईं से मुक्त थे

उनके बारे में
यह भी एक किंवदंती थी

वे अपनी आँखों में
थोड़ा पानी छिपा लेते थे

इस अमानवीय समय में
उन्होंने बचाया
यथासम्भव एक शब्द भरोसा
सिर्फ मनुष्य नहीं
अधिकतर पशु पक्षी भी उन पर भरोसा रखते थे

एक कारण यह भी था
कि वनपथ में
जब वे गुजरते थे
असंख्य वृक्ष हाथ हिला हिलाकर
एक कामरेड की तरह
उनका अभिवादन करते थे

यह कथन अतिनाटकीय लग सकता है
लेकिन पितामह की तरह
वे पहाड़ को देखते थे
और सादर थोड़ा झुक जाते थे

उनके अंतस में
बादल घुमड़ते रहते थे
और छूने पर
आत्मा के एक एक रन्ध्र को
पूरी तरह तरबतर कर देते थे

वे खोजी थे
लेकिन अपने अविष्कार

व्यापारिक कम्पनियों की तरह
उन्होंने कभी पेटेन्ट नहीं कराए
मसलन खरबूज-तरबूज की लज्जत
सिर्फ उनकी नहीं
पूरी सृष्टि की संपत्ति थे

उन्हें पता था
कि पर्यावरण महोत्सव में शिरकत किए बिना
किस तरह बचाया जा सकता है ब्रह्माण्ड
प्रकृति से
वे सिर्फ लेते ही नहीं थे
उसे देते भी थे

विकास क्या है
दूसरों के गोश्त में नाखून धँसाये बिना
उन्होंने परिभाषित किया

उन्होंने चरितार्थ किया
करघा चलाते हुए
कबीर की तरह गाया जा सकता है
जीवन का गीत

चप्पू चलाते हुए
मछली जाल फेंकते हुए
जब वे उदग्र कंठ से खींचते थे तान
पक्के सुर के तमाम घरान
अनिर्वचनीय रोमांच से भर उठते थे

लोकभाषा में
कविगण कहते थे
और सच ही कहते थे
कि कछार में
बबूल के पेड़ की तरह
वे वहाँ जीवट के प्रतीक थे

यह व्यंजना नहीं है
कि जो कल यहाँ
एक जीवित यथार्थ की तरह थे
एक हतप्रभ यथार्थ की तरह
वे आज यहाँ नहीं हैं

कोई नहीं बताता
वे यहाँ क्यों नहीं हैं

क्यों नहीं है
चरनी पर उनकी रंभाती गाय
मुर्गीबाड़ बतखों की सफेद फड़फड़ाहट
चरर चरर करती बैलगाड़ी
खजूर इमली के गाछ
उनकी हथपोई रोटी की गंध

कहाँ चला गया
वह कबड्डी का मैदान
जहाँ खेलते हुए
वे कभी मरते थे
और कभी जी जाते थे

कोई नहीं बताता
हाँका की तरह उन्हें खदेड़कर
विदेशी पूँजी से जहाँ बन रहा है तापगृह
उसकी महँगी बिजली से
तपते जेठ के दिनों में किनके घर ठंडे होंगे
और कटकटाती पूस में
किनके घर होंगे गरम

कोई नहीं बताता
जब यहाँ होगी दिव्य जगमग
नदी तट से विस्थापित
क्या फिर दिखायी देंगे
या वे तब भी खोज रहे होंगे
किसी गंदे नाले स्थित
टायर मोमजामे की थिगलियों की छत के नीचे
सिर्फ ढिबरीभर रोशनी

कोई कुछ भी नहीं बताता
सबने साध रखी है रहस्यमय चुप्पी

लेकिन हम क्यों चुप हैं
क्या हम भी शामिल हैं
कहीं न कहीं
इस पूरे प्रकरण में ।

## वर्णमाला से बाहर

बच्चा वर्णमाला नहीं जानता

सफल पिता की तरह
उसे हँसने का व्याकरण भी नहीं मालूम

लेकिन जब वह हँसता है
हँसी के शास्त्र में जुड़ जाता है
एक अलौकिक अध्याय

आँख तरेरने के बावजूद
बच्चा
'साहब' से नहीं कहता
पिता की तरह झुककर 'नमस्कार'
न कहता है उनसे झिड़कियाँ खाने के बाद
'कृपा रखें सरकार'

बच्चा
दुनियावी वर्णमाला से बाहर है
एक कोंपल की तरह प्रमुदित
स्वतःस्फूर्त

बच्चा
रेसकोर्स का एक अनपरखा अश्व है
उस पर दाँव लगा रखा है
माता पिता ने अपनी आकांक्षाओं का भविष्य

कोई रियायत नहीं
झूलने-खेलने का अवकाश भी नहीं
उसे ठोक पीटकर वनाया जा रहा है
वर्णमाला का एक वद अक्षर

जब वह बडा होगा
अपने शत्रु का भी विनम्रता से
हाथ जोडकर करगा 'नमस्कार
सर्कस क शेर की तरह ।

## रोविले वच्चे

मुद्दत वाद
मै अपन पुरान शहर म था

इस शहर म
मै जाना चाहता था
उस स्टशनरी की दुकान
जहाँ कभी हमारा शस्त्रागार था
जहाँ वैठते थे हँसमुख चाचा असलम
एक पन दिया था उन्हान मुझे उधार
परीक्षा क दिना में

उस पन का
मै कर्ज उतारना चाहता था
एक वार उनसे मिलना चाहता था

जव मै पहुँचा
वहाँ कुछ रोविले वच्चे
वीडियोगम्स खेल रहे थे
वे खल गाडियाँ तेज चला रहे थे
और दुर्घटना पर खिलखिला रहे थे

कुछ रोविल वच्चे
तोपें दाग रहे थे
और अपन ध्वस आँकडो पर
जोर जोर तालियाँ वजा रहे थे

अपन पुराने शहर म
मै सन्न खडा था
और उनके हिंसक खेल म
अपना बचपन खोज रहा था

लेकिन वहाँ
न मेरा बचपन था
न ही जरूरतमद बच्चो का शस्त्रागार
रोविले बच्चो ने उन्ह पूरी तरह उडा दिया था ।

# सवाद

मेरे बेटे के पास अजीब भाषा है

वह जब बोलता है
मुहावरे बोलता है
शब्द नहीं

दूरदर्शन ने उसे या तो मुहावरे सिखाए है
या पूरे वाक्य
उसमे होती है न तो गरमाहट
और न ठडापन
अभिप्राय भी नहीं

मेरा बेटा
एक कुली की तरह
दूसरे की भाषा के बक्से को ढो रहा है

जब वह कुछ माँगता है
चॉकलेट या बिस्कुट
मेरे उर में कोई उर्मि नहीं उठती
बेचैन नहीं करती मुझे उसकी कोई इच्छा
लगता उसके गले से कोई और बोल रहा है

नकल की भाषा में सवाद नहीं होता
आते नहीं विचार
वाक्य बजते है
खाली कनस्तर की तरह ।

# अयोध्या

## एक

अयोध्या मे क्या नहीं है

सात्वना देती सरयू है
कगूरा पर उछलते बदर है
प्रार्थना म झुकत सिर है
अफवाह है
फौजी बूट है

अयोध्या म
इन दिनों सब कुछ है
सिर्फ नहीं है
तो ईंधन

थोडा कुछ ईंधन है
तो उस सुरग में है
जो जिलाधीश की रसोई म सीधी खुलती है
या उस स्त्री क सपने म है
जो ईंधन के इतजार म
पतीली मे अदहन रखकर सो गयी है

कतार में लगे कनस्तर
राशन दुकान पर सिर धुन रहे है
और सब एक-दूसरे से पूछ रहे है
ईंधन कहाँ है

तमतमाकर कहता है
एक नागरिक
ईंधन हम है
राजयज्ञ में जलने के लिए ।

## दो

अयोध्या
एक सवादप्रिय नगर है

इन दिना
यह एक किला है
प्रवेशपत्र के बिना
जहाँ कोई अपने घर नहीं पहुँचता

प्रार्थना करते करते
अचानक यहाँ लगन लगते है नार
और नार
प्रार्थना के वेश मे
बिछा रहे है उस जगह बारूद
जहाँ दीवार सबसे अधिक भुरभुरी है

आजकल
अयोध्या
अखबारो का इश्तहार है
या एक मतपेटी
जिसमे एक राजमुकुट बद है

न न
इसे मत खाल
इसमें मतपत्र नहीं
पवित्र पुस्तका मे छिप चाकू
और शव है ।

## तीन

सब कहते है
अयोध्या म डर नहीं है

अयोध्या में
अलीगढ के ताले लगते है

डर बाहर है
डर सचिवालय मे है
डर फुसफुसाहटों म है

डर कैसेटों से है
डर लाउडस्पीकरों से है

डर
वहाँ है
जहाँ भीतर आदोलन नहीं
और आत्मा को कपडे सा निचोड दिया गया है

वैसे अयोध्या में डर नहीं है

किन्तु साँय-साँय करती दुपहर में
जब गली मे कोई गुजरता है
तो उसकी रफ्तार स्वत कुछ बढ जाती है
जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो ।

## चार

अयोध्या
एक रगमच है

रगशाला म
सज शृगार कर रह है

कोई चोटी साँट रहा है
कोई दाढी

अनुभवी अभिनेता
दोना अपनी जेब म रखते है

उनके चेहरे पहचाने नहीं जात
उनकी बोली पहचानी नहीं जाती

अयोध्या
एक सफल प्रदर्शन है

परदे पीछे
पैंट की जेब मे हाथ डाल
निर्देशक मुस्करा रहा है

उसकी एक जेब मे
अपार जमा चदा है
और दूसरे में गुप्तदान
जिस पर कोई आयकर भी नहीं लगता ।

पाँच

वे कहते है
अयोध्या कैसेटों मे है

पर्दे पर अयोध्या देखने के बाद
अकस्मात् मेरे मुँह से निकलता है
यह गलत है
यह हमारी अयोध्या नहीं है

अयोध्या में
पवित्र जगहो को जूते गदे नहीं करते

पत्ते झरते है
तो आवाज आती है
अयोध्या म इतना टूटा
पर कैसेट मे
टूटने की कोई आवाज सुनायी नहीं देती

अयोध्या मे
बहुत कुछ बचा है
पर कैमरे की आँख उन तक पहुँच नहीं पाती

अयोध्या बहुत बडी है
वह कैसेट में समा नहीं सकती ।




छह

अयोध्या
एक ताजा खबर है

एक आदमी
अखबार पढ़ता हुआ आता है
और मोहल्ला धीरे धीरे सुलगने लगता है

गेंद की तरह
आदिम किलकारियाँ आकाश की ओर उठती हैं
और डरी आत्माओं के सिर पर गिर पड़ती हैं

अयोध्या
एक चिकनाली खबर है
या प्रकाशोत्सव लाने वाला कोई तिलिस्म
जिसमें कुछ भी नहीं दीखता
न दोस्त
न पड़ोसी
न वह चेहरा
जो इस खबर के पीछे छिपा हँस रहा है

अयोध्या
सिर्फ खबर नहीं है

मनुष्यता का पहचान पत्र है
जो इन दिनों संवाददाताओं के जेबों में भी नहीं मिलता।

## सात

अयोध्या
अभी भी उदार है

सरयू
उसी तरह हर लेती है थकान
यात्रिया की

दस्तक देने पर
दरवाजा थोडा ठहर कर सही
लेकिन खुलते है

लोग अब भी मिलते है
और दुश्मनों की तरह
हाथ नहीं मिलाते
रोककर पूछते है
बच्चों का परीक्षाफल
पान खिलाते है
चाय गुमटियों की बेचो पर बैठकर
बतकही और बहस करते है

औरतें पडोसियों से आटा माँग लेती है
और आटा चक्की
गेहूँ पीस देती है
और धर्म नहीं पूछती

अयोध्यावासी
अभी भी मिलनसार है

सिर्फ जब वे बात करते है
पता नहीं क्यों
कभी कभी
उनकी आवाज मे
कुछ जली चीज की गध आती है
और कुछ नहीं ।

# अयोध्या कुछ और कविताएँ

## एक

अयोध्या मे
कर्फ्यू है

लेकिन अयोध्या के भीतर
एक और अयोध्या है
जहाँ कर्फ्यू नहीं है
वहाँ बगीचों में फूल खिले है

यहाँ भव्य प्रासादा मे
फूल सूख रहे है
कोई उन्हें पानी नहीं देता
सब ढूँढ रहे है माली
और माली वहाँ रहता है
जहाँ कर्फ्यू है

अयोध्या में
जितने दिन कर्फ्यू बढ रहा है
उसी अनुपात में
मुरझा रहे है वहाँ फूल
माली की रोटियाँ भी उतनी ही घटती जा रही है

अयोध्या में
अजीब रिवाज है

कर्फ्यूग्रस्त इलाके मे
पुष्पगुच्छ देते हुए
श्रीमता के साथ फोटो खिंचाने की होड मे
गाडियाँ दौड रही है

लेकिन मालिया को कर्फ्यूपास भी जारी नहीं हाते ।

## दो

अयोध्या की पाकशाला से
धुआँ उठ रहा है

पक रही है मन्त्रणाएँ
घृणा के चूल्हे पर

यहाँ
एक को सिंहासन
और दूसरे को निर्वासन की खिचडी पक रही है

सब कुछ छोडकर
अयोध्यावासी बिस्तरबंद में बाँध रहे है
कुछ गुजरे अच्छे बीते दिन

वे छिपाकर ले जा रहे है
आत्मा की जेबों में
अपने उजडे घरों की थोडी मिट्टी
और सपना की राख

उन्हें कोई नहीं रोकता
न सगी और न साथी
न पडोसी
न न्यायाधीश
न महापौर

व सब जा रहे है
और भरत अयोध्या मे फिर नहीं है

इतजाम पूरे हो चुके है
विशेष रेलगाडियॉ चला दी गयी है
दरबदर होने के लिए ।

## तीन

अयोध्या मे
प्रक्षेपास्त्रो का जखीरा है
जो यहाँ से छूटता है
और सीधे बबई और भोपाल मे गिरता है

वहाँ शवो की गिनती चल रही है

गिनी जा रही है
दाढियाँ और चोटियाँ

गणनाकार
कुछ शवो को अलग रख रहे है
जिनके न दाढी है
न चोटी
न केशों में कघा

बौखलाकर
गणनाकार पूछते है
आखिरकार ये मृतक कौन है
जिनकी हथेलियो में सिर्फ गाँठ ही गाँठ है

अयोध्या में
मृतकों की सूची प्रकाशित हो चुकी है
इसमें इनका कोई जिक्र नहीं है ।

## चार

अयोध्या मे
कुछ न कुछ रोज टूटता है
और उद्वेगहीन अफसर
टेलीफोन पर कान लगाये
अदृश्य आदेशा के इतजार म वैठे रहते है

अयोध्या में
इतना टूट चुका है
कि वहाँ अव जिधर देखो
सूराख ही सूराख है

कुछ दीवारा मे
कुछ आत्माआ मे

और इजीनियर परेशान है

किसी न किसी तरह
वे भर दते है दीवारों के सूराख
लेकिन अपनी किसी किताव में उन्ह
आत्मा क सूराखा को भरने की तकनीक नहीं मिलती

अयाध्या की आत्मा क
पोर पोर रिस रहे है
और मै जानता हूँ
कि अयोध्या का एक अच्छ डॉक्टर की जरूरत है

मै डॉक्टर नहीं हूँ
लेकिन मेरे पास
प्रेम का एक फाहा है

रिसते जख्मों पर
मै उसे रखना चाहता हूँ

मै अयोध्या को खुश देखना चाहता हूँ।

## जूते काट रहे है

मुझे शहर जाना है
और जूते काट रह है

मै जूते उतारना चाहता हूँ

लेकिन मै डरता हूँ
कहीं मेरी देशज सवेदनाएँ
शहर मे आहत न हो जाएँ

मै शहर से डरता हूँ
जहॉ जूता एक विचार है

जहॉ जूता की चमक मे
गायब हो जाता है
एक साबुत आदमी
उदार व्यवस्था के बावजूद

जहाँ बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ
हमारी आँत में छिपे कीडों की तरह रहती है
और सिर्फ अपने ट्रेडमार्क स
स्वदेशी जूता का
हमें महँग दामों मे बचती है

मुझे शहर जाना है
और जूत काट रहे है
दुश्मन की तरह ।

## अद्वितीय लोकतंत्र

भागलपुर स्टेशन से
जनता रेल चल चुकी थी
और गुर्राती हुई
राजधानी जा रही थी

कमानीदार गुड्डे की तरह
मुसाफिर का सिर हिल रहा था
कभी इधर
कभी उधर
और उसकी नाक
हल्की हल्की बज रही थी

आरक्षित डिब्बे का
यह सुखद विश्राम न था
श्रम की गहरी थकान थी

मुसाफिर को होश न था
न अपने सिर का
न अपनी जेब का
जो एक गिरहकट की आँखों में चमक रही थी

जेब काटना जुर्म था

पर मुश्किल यह थी
कि गिरहकट के पास टिकट था

और हमारे डिब्बे मे
अद्वितीय लोकतत्र
जहाँ टिकट लेने के बाद
कुछ भी वर्जित न था

वहाँ कुछ भी निषिद्ध न था

निषिद्ध थी
सिर्फ आग

आग इजन मे थी
और कुछ उसके अत प्रदेश में
जिसस गाडी छुक छुक करती चल रही थी

हवा म
चिंगारियाँ उड रही थीं
इधर गिरहकट की अगुलियाँ
शनै शनै
जेब की तरफ सरक रही थीं

यह हरकत
एक यात्री कनखी से देख रहा था
पर वह ऐसा दुबका था
मानो सपन म
कोई गिरहकट
उसे चाकू मार रहा था

डिब्बे म खूब हलचल थी

काई फिल्मी पत्रिका चटखार लकर पढ रहा था

कोई हाथ मिला रहा था
कोई ऊब के गुब्बारे उडा रहा था

अपरिचितों की दी चीजें न खाएँ
स्टेशन पर लिखी इस चेतावनी की धज्जियाँ उडते हुए
अनजान के साथ
कोई पूडी के साथ अचार खा रहा था

कुछ ताश खेल रहे थे
एक साँवली सलोनी को घेरे
कुछ फब्तियों के अनार फोड रहे थे

सलोनी
हतप्रभ
और चुप थी

अफसोस
उनके लिए वह सिर्फ केलिपुष्प थी

अफसोस
कुछ के लिए वह असवार थी
और कुछेक के लिए मात्र एक धोती
जो सिर्फ एक तीली से जलायी जा सकती थी

डरी गिलहरी सी
प्रतिपल
वह शौचालय की ओर झाँक रही थी

वे कम हँसते थे
लेकिन जब वे हँसते थे
उनके गालों पर
जले खेतों के दाग चमकते थे

दुख
प्रतिशोधी सर्प की तरह
उनका पीछा करते थे
मगर वे अपने दुख को
तंबाकू के साथ रगड़ रहे थे

डिब्बे से
कुछ बेदखल थे
और रेलछत पर
परछाइयों की तरह जा रहे थे

यह सच नहीं है
कि उनके पास टिकट नहीं थे

यह भी सच नहीं है
कि आत्महत्या उनका इरादा था

रेलमंत्रालय के पास
उनके नाम नहीं थे

पता नहीं क्यों
उनके नाम अक्सर गायब रहते थे

खेतोनियों से उनके नाम गायब रहते थे
राशनकार्डों से उनके नाम गायब रहते थे
स्कूल पंजिकाओं से उनके नाम गायब रहते थे
मृतक सूचियों से उनके नाम गायब रहते थे

क्या वे गुमनामी से नहीं डरते थे

नहीं, इतना डरते थे
कि अपने हाथों पर
अपने नाम गोदा लेते थे

सूरज ढल रहा था
रात की स्याही फैल रही थी

किसी बात
किसी तरह भी
[illegible] अना [illegible]
इधर-उधर [illegible] सी थी

यह [illegible] था

मैं [illegible] था
उस [illegible]
[illegible]

शायद [illegible] था

कोई कर रहा था
आजकल इसका दौर है

दूसरा कर रहा था
पर मामूली था
इसका सरगना बड़ा और है

सरगना
भूमिगत नहीं
सार्वजनिक समारोह की तरह दृष्ट थ

व दिन गए
जब जेल जात समय
व अपन चेहर रूमाल या अख़बार से छिपा लेत थे

रंगीन पत्र पत्रिकाओं में
महानायकों की तरह
अब उनके सस्मरण और साक्षात्कार छपते है

कहते है
उनके हाथों के निशान सिर्फ थानों में ही नहीं मिलते
मतपत्रों पर भी चमकते है

स्याही से नहीं
उनके निर्वाचन क्षेत्र में
बारूद से मतपत्रों पर निशान लगते है

बहस चल पडी थी

छुक छुक करती
लोकतत्र की गाडी जा रही थी
ऊँघता यात्री जग गया था
लेकिन उसके पडोस में बैठे मुसाफिर को
धीमी धीमी झपकी आ रही थी ।

पाठक
उत्तर नहीं सुनते
और अंक दे देते हैं

बच्चे
दादी से कहानी नहीं सुनते
छोटे परदे पर देखते रहते हैं
संतति निरोध का विज्ञापन

टहल खत्म होने के बाद
पत्नी सुनाती है पूरे दिन की
अपनी व्यथा कथा
पति नहीं सुनता
सिर्फ भरता रहता है हुंकारी

सच तो यह है
कोई अपने मन की आवाज भी नहीं सुनता

पूरी सभ्यता जैसे बहरी हो गयी है
उसे एक उम्दा कान मशीन की जरूरत है ।

## अफसर कवि

जहाँ किसी तरह कवि अपने दिन गुजार रहा था
वहाँ पहुँचती है
अफसर कवि की कार

फाइल बाजार बद होने के बाद
वह कुछ पल भूल जाना चाहता है
जनशिकायतो पर जमी धूल
धूल उडेगी और आएगी उसे छींक
बेहतर है चलें तत्सम पदावली के काल्पनिक काव्य ससार में
जहाँ उडती है आम्रकुजो की खुशबू
और सुनायी देती है कनक देह की सरसराहट

इसने बहुत देखे है
काव्य बाजार में घूमते फिरते कवि आलोचक
लोभ और साहस की कमी से
जो उसके इर्दगिर्द उकडूँ बैठे रहते है

सताए समय स
सब कुछ झपट लेने को आतुर
अफसर कवि की
जहाँ रुकती है निगाह
वहीं है प्रकाशक
वहीं है आलोचक
वहीं है पुरस्कार

जो नहीं है, नहीं रहेगा उसके पास
मसलन उसकी कविता मे
एक शब्द होगा 'पसीना
लेकिन पसीने की खटन और गध नहीं

कविता पुस्तकें होगी
कविता नही

खतरा उठाए बिना नहीं लिखी जाती कविताएँ
प्रेम कविताएँ भी नहीं ।

## साध्य सभा

साध्य सभा मे,
अभागे धरापुत्रा के दु खो पर
वे शोक व्यक्त करने आए थे

समाज की पतनशीलता की फिक्र में
उनके हाथों मे गिलास खनखनाए
फिर सभा रौ में आ गयी

युवा छपास प्रार्थियो से घिरा
एक गदगद सपादक
अपनी काव्यपुस्तक पर छपी बहत्तरवीं समीक्षा दिखा रहा था
एक अन्य युवा लेखक
कुछ अधेड लेखकों को अश्लील चुटकले सुना रहा था
काग दृष्टि से इधर उधर ताकते हुए
तीसरा अनुदान के लिए एक अफसर कवि के कान मे
कुछ फुसफुसा रहा था
केश रँगे हुए चौथा चचा गालिब की शायरी के साथ
नौसिखुआ को मद्यपान की दीक्षा दे रहा था
दुबका हुआ पाँचवाँ खामोश था, नगरपालिका मे
सूखी कमाई का वह क्लर्क लेखक प्रकाशक न मिलने पर
क्षुब्ध था
छठा चहक रहा था कि पुरस्कार समिति के एकछत्र सम्राट की अर्धांगिनी को
उसकी लायी साडी भा गयी है
सातवाँ बडबडा रहा था कि उसकी किताब सरकारी खरीद में नहीं आयी
आठवाँ लेखक सघ के लोकतात्रिक पहलू पर प्रवचन दे रहा था

और पिछले पच्चीस बरसो से उसका स्थायी
अध्यक्ष बना हुआ था
नवाँ साठ बरस पूरा कर रहा था और अपने अभिनदन ग्रथ के लिए
कुछ कमजोर लेखक खोज रहा था
प्रगतिशील झोला लटकाए दसवाँ फिलहाल
प्रगतिशील विरोधी कला सरक्षक की स्तुति के लिए एक चमकीला
वाक्य गढ रहा था
अपने लेखन से निराश ग्यारहवाँ अपनी साख को
ब्लर्ब लेखन से मजबूत कर रहा था

सभा उतार पर थी
उन्होंने अपने अपने दु ख पी लिए थे
और अब दु खी नहीं थे
सिर्फ उनके धरती नही दिख रही थी
और उनके पाँव लडखडा रहे थे ।

## जरा सा प्यार

जी हाँ आप जरा उस बूढ़ हैंडपप की ओर देख
जा निराश बैठा है
उस रिहायशी इलाक म
जहाँ घरों म समय पर आता है
नगरपालिका का पानी
और नागरिका की कैद रहती है आत्माएँ
उनके घरा की तरह
चारदीवारी के घेर में

आप सही समझ रहे है
मै उसी हैंडपप का जिक्र कर रहा हूँ
जहाँ अक्सर कोई नहीं जाता
शायद मै भी नहीं मुडता उधर
अगर खडी दोपहर न होती
और लगती नहीं मुझे तज प्यास

लबी उपेक्षा की धूल पाछने क बाद
जब मैंने चलाया हैंडपप
जल की तेज धार नहीं
शूँ शूँ करती तेज गुर्राहट निकली उसस
जैसे गुर्राता है वह आदमी
मिला न हा
जिस लब अरसे से प्यार

जरा सा
सिर्फ पानी चाहिए
गुरति हैंडपप को

जरा सा
सिर्फ प्यार चाहिए
गुरति आदमी को

फिर अत स्तल से फूट पडेगी
प्रेमजल की अजस्र धारा ।

## एक वृक्ष की तरह नहीं

एक वृक्ष की तरह नहीं
एक प्रवासी सा
सिर झुकाए खडा है
शहर म पेड

इस्पाती डैना के आतक से
फुनगिया पर गप्प लगाने अब कम आत है
उसक चिरसखा कौव्वे और ताते

एक वृक्ष की तरह नहीं
एक निराश मित्र की तरह
सडक किनार खडा है
शहर म पड

सडक की चिल्लपा स
गिलहरियो की उड जाती है नींद
और उन्होंन तज दिया
खोखल सरीखा पुराकालीन
पैतृक आवास

एक वृक्ष की तरह नहीं
दगाग्रस्त इलाक क
एक निर्जन घर की तरह है
शहर म पड

उसकी हरी छाया हो गयी है स्याह
प्रसन्न टहनियाँ जब लगाती है तेज पेंग
छूटने लगती है उसकी हँफनी
दमा मरीज की तरह

एक वृक्ष की तरह नहीं
पाँव कटे एक सैनिक की तरह
अपनी साँस गिन रहा है
शहर में वह पेड़ ।

## जुडवाँ आम

वह ढेरी में दिख रहा था
सबसे अलग थलग
कुछ टेढा-मेढा
और किंचित विरूपित

दो आमो के प्रणय का
यह एक सार्वजनिक दृश्य था

दुनिया जहान को ठेंगा दिखाते हुए
कुरूप और अभद्र दिखने की सीमा तक
वे एक दूसरे से सन्नद्ध थे

हर कोई
कौतूहल से उसे उठाता
प्रीतिकर विस्मय से देखता
और रख देता

किसी ने उसे चखा नहीं

कौन दुष्ट
इस अद्‌भुत सृष्टि को नष्ट करता ।

## दागी आलू

छिलकों के साथ
मैं फेंकने जा रहा था
दागी आलू

वह आयी
और उसने एक-एक करके चुन लिए
सब दागी आलू

फिर उसने काट कर अलग किया
उनका वह हिस्सा
जो सड़ा था

मैं शर्मिन्दा था
आलू का एक बड़ा हिस्सा अच्छा और बेदाग था

मुझे लगा
कितना कुछ अच्छा बचाया जा सकता है
इस तरह
इस पृथ्वी पर ।

## आग की लपट

आप कभी उससे मिले हैं

वह दौड रहा है
जो रेलगाडी के साथ
रेलपेल और धुएँ के बीच

अरे ! वही देखिए न
जो उतार रहा है एक भारी संदूक
रेलगाडी के डिब्बे से

उसके सिर पर संदूक है
संदूक पर बिस्तरबंद
कंधा पर थैले

संदूक, बिस्तरबंद और थैले में क्या है
वह नहीं जानता

वह नहीं जानता
कहाँ से आया है सामान
और कहाँ जाएगा

सिर्फ वह उसे ढो रहा है
लेकिन उसकी आँखो में
न तो शर्म है
और न ही अपमान की बारीक रेखा

सिर्फ कातरता है
बैल क पानीभरे आँखा की तरह

बोझ लादे हुए
वह जब मेरे पास से गुजरता है
उसके शरीर से
एक तीखी गध निकलती है

यह हमारी गध है
मै इसे पहचानता हूँ

कुछ ऐसी ही गध
मेरे शरीर से निकलती है
जब मै शाम को लौटता हूँ
कारखाने मे

कुछ ऐसी ही गध
मेरे पिता के शरीर से निकलती है
जब समूचा बस्ती में
बाँटकर आते है
वे ढेर सारी चिट्ठियाँ

एक खटते आदमी की
जीवित और नमकीन गध
जो फैलती जा रही है
चारों तरफ
पूरी गरिमा के साथ

रेलगाडी आ गयी है

वह फिर दौड रहा है
रेलगाडी के साथ
और
उसकी लाल वर्दी चमक रही है
रेल म
आग की लपट की तरह ।

## 'डी' के बाहर

रात के झीने आलोक में
जब सिर्फ साँस होती है आसपास
माँ की दमा खाँसी के बीच
वह अपलक देखती है
अपने निष्प्रभ तमगे
प्रशस्तियाँ और शील्ड
और समस्त लौकिक यातनाओं के आरपार
खो जाती है
करतल ध्वनि की कोलाहल में

बहुत बार न जाने कितनी बार
कभी विद्यालय कभी जनपद
कभी अपने राज्य के लिए हर बार
अपनी ड्रिबलिंग से प्रतिस्पर्धी को चकमा देते हुए
वह उछालकर डाल देती थी बास्केट में बॉल
लेकिन अपनी तेज उडान के बावजूद
जीवन ससार में
वह खुद रह गयी 'डी के बाहर

वह एकाकी लेकिन अकेली नहीं
उमके दु ख कभी दिखे नहीं

वह सृजित कर रही है
सपन के भीतर एक और सपना
बिना अवसाद बिल्कुल चुपचाप

जहाँ न होगा 'डी
न प्रतिक्षण सीटी बजाता रफरी
जहाँ दुष्ट आत्माओ का एक बॉल की तरह
ड्रिबल कर दूर तक ल जाएँग नन्हे-नन्हे हाथ
और असभव आत्मविश्वास के साथ
डाल देंगे
नरक की बास्कट में

मद मद
फिर वह मुस्कराएगी
अक्सर जैस वह मुस्कराती है
शाला स छूटे बच्चों का
हुडदग दखने के बाद ।

## बारहवाँ खिलाड़ी

टीम में चयन होने के उल्लास
और बैटिंग पैड चढ़ाने की इच्छा में सुलगते हुए
अपनी टीम के ग्यारहवें साथी के ऊलजलूल शॉट की
जो पैवेलियन में बैठा हुआ बारीक आलोचना कर रहा है
वह क्रिकेट टीम का बारहवाँ खिलाड़ी है
अपनी टीम की वह एक कमजोर आश्वस्ति है और
यही उसकी वंदना है
उसके अवसाद में न जाने कितने चौके-छक्के
और कैच छिपे हैं
उसकी हताशा एक ऐसे युवा कवि से मिलती-जुलती
है जिसके पास ढेरों कविताएँ हैं लेकिन कोई
उन्हें छापता नहीं
अपने साथी के दुर्भाग्य से जब मैच में उसे क्रीज
पर बैट रखने का मिलता है सौभाग्य
उसकी टाँगें दिल की तरह काँपने लगती हैं
और उसे दिखायी देने लगते हैं वे रुआँसे चेहरे
जो पिछले मैच में टीम से बाहर कर दिए गए थे
क्रिकेट मैदान में उसके अदृश्य रहने के बावजूद
जब उसकी टीम जीतती चमचमाती ट्रॉफी
और उसे मिलती बेहिसाब बधाइयाँ
वह असमंजस के रथ पर आरूढ़ होकर
आकाश में उड़ने लगता
और बैट-बॉल स्पर्श किए बिना
जब कई दफा उसकी हार जाती टीम

वह ऐसा पराजित महसूस करता
जैसे पराजित सा महसूस करते है देश के नागरिक
अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति म राष्ट्रीय विफलता क बाद
बिना बहस किए ।

## अतिम इच्छा

इस पृथ्वी पर
एक मनुष्य की तरह
मै जीना चाहता हूँ

वे खत्म करना चाहते है
बैक्टेरिया की तरह

उनके तमाम हथकडो के बावजूद
मै नहीं मरता
उपेक्षा, भूख और तिरस्कार से लडते झगडते
बढ गयी है मेरी प्रतिरोधक सामर्थ्य

मै मृत्यु से नहीं डरता
और अमरत्व में मेरा विश्वास नहीं
लेकिन मै नहीं चाहता प्रतिदिन मरना
थाडा थोडा

किंचित विनम्रता
किंचित अकड
और मित्र हँसी के साथ
बेहतर सृष्टि के लिए
मै एक पके फल की तरह टपकना चाहता हूँ
जिसे लपकने के लिए
झुक जाएँ एक साथ
असख्य नन्हे-नन्हे हाथ

अधूरी लड़ाई बढ़ाने के लिए
फल रस की तरह
मैं उनके रक्त में घुल जाना चाहता हूँ

मैं एक मनुष्य की तरह मरना चाहता हूँ ।



समाज के करुण जीवन से अर्जित है। इसीलिए उनकी कविता समकालीन समय की सच्ची और खरी जुबान है। विनोद दास ने इसे अपने काव्य विवेक और मनुष्य के प्रति अपनी गहरी अतर्निष्ठा से सभव किया है। दरअसल वे अपनी पीढी के उन गिने चुने वयस्क समझ रखने वाले कवियों में है जिनके पास समाज व्यवस्था और मनुष्य के द्वन्द्वों और जटिलताओं को समझने-जाँचने की सूझबूझ भरी मानवीय दृष्टि है। उनकी कविता इसीलिए एक ऐसे ठोस धरातल पर खडी मिलती है जहाँ चीजों की एक निर्मम चीरफाड के साथ मानवीय अनुभूति की एक सघन आँच दिपती रहती है। इस कविता की आँच को अपनी सवेदना की त्वचा पर वही बर्दाश्त कर सकता है जिसक पास विनोद जैसी अविकल अनुभव की एक सम्पन्न विरासत हो। यही कारण है कि उनकी कविता में दिखावे-भुलावे, फैशन अतिरजना और सतहीपन के लिए कोई जगह नहीं है बल्कि एसी चीजों के लिए उनका आलोचकीय विवेक एक सेंसर की तरह कविताओं के बीच बराबर काम करता रहता है। जिन सुधी पाठकों ने 80 के दशक में उनकी आरभिक तथा 86 में छपे उनके पहले सग्रह 'खिलाफ हवा से गुजरते हुए' की कविताएँ पढी है उनके लिए यह सग्रह विनोद दास की 'काव्ययात्रा के अगले दौर की विस्मयपूर्ण खबर है। कवि सवेदना के धरातल पर जितना समृद्ध हुआ है, अभिव्यक्ति के धरातल पर उतना ही व्यापक और सजग। उनके काव्यशिल्प का कोई एक बना-बनाया साँचा नहीं है। छोटी कविता हो या लम्बी अथवा सीरीज कविता वे हर बार एक नए सिरे से काव्यशिल्प आविष्कृत करके सृजनात्मक जोखिम उठाते है।

विनोद न तो लिजलिजी भावुकता और न ही एकदम सूखा, निचुडी और रसहीन कविता के कवि है। उनकी कविता प्रखर ऐन्द्रिक सवेदनों की सक्रिय सहचर है। उनकी काव्य-सवेदना में जहाँ एक ओर करुणा का महीन आवाज सुनायी देती है, वहीं उनकी भाषा में लोक-जीवन की मुग्ध व्याप्त है। इस सग्रह की कविताएँ अगर 'वर्णमाला से बाहर' के अनुभवों और जावनों का एक सजग दस्तावेज हैं तो यह कहना सटीक होगा कि कविता की समकालीन वर्णमाला से बाहर खडी इन कविताओं स गुजरना एक रोमाचक सृजनात्मक अनुभव है।